दादी जानकी जी के आशीर्वचन

ओम शान्ति ओम शान्ति

देखो गुलबर्गा वन्डरफुल है..... हमारे प्रेम भाई की कमाल है..... सुना रिट्रीट सेन्टर बना है, वहॉ सदा योग भट्ठियॉ चल रही हैं, योग भट्ठी का नाम सुनते हैं ना.... तो हमको अपने पुराने साकार के दिनों में, बाबा ने जो हमको योग भट्ठी कराई है, इतना अच्छा.... अभी तो योग इतना सहज हो गया है, बस बाबा मेरा..मैं बाबा की...हमें तो हमेशा याद आता है..... साकार बाबा ने मुझे अपने कमरे में इशारे से बुलाया, खड़ी थी, कहा बच्ची ये गीत गा रही हो ना, किसी ने अपना बना के मुझको, मुस्कराना सिखा दिया.....देखो कोई भी मुश्किलात आये ना..... तो मुस्कराने से वह चली जाती है बेचारी..... वह परेशानी सोचती है.... इसे मेरी परवाह नही है..... तो मुझे तो बाबा ने वरदान दिया है..... तब से बेचारी मुश्किलात कोई भी आती है.....पर मेरे को कुछ उसका असर नही होता.... शरीर तो पुराना है, परन्तु फीलिंग रही होगी... मैं क्या करूँ ? कैसे करूँ ? नहीं..... क्या करूँ ये शब्द भी असल मुख तो क्या मन में पैदा ही नहीं, संकल्प में भी नहीं आयेगें, अभी मुझे खुशी हुई तो योग भट्ठी है, तो उसमें हमारा भाई आ रहा है..... तो सभी को याद स्वीकार हो..... क्योंकि योगभट्ठी का वातावरण बहुत पॉवरफुल होता है.....कोई भी बात नहीं, इसलिए मैं कहती हूँ, बाबा हमारा शिक्षक भी है, तो रक्षक भी है सुना..... पहले जो शिक्षा देता है, शिक्षाएं चलने के लिए रक्षा करता है.....जैसे एक छोटा बच्चा है... छोड़ता नही है....योगभट्ठी का नाम ही ऐसा है। ये भी सुना था रिट्रीट सेन्टर बना ही है वहॉ योगभट्ठी है, यह बहुत अच्छा है, ओ.के. ओम शान्ति। मेरा तीन बारी का ओम शान्ति, क्यों कहती हूँ ? क्योंकि पहला ओम शान्ति मैं कौन ? दूसरा ओम शान्ति मेरा कौन ? तो मैं आत्मा हूँ ना, तो मेरा कौन है, बाप परमात्मा, वन्डर तो यह है कल की मुरली में बाबा ने कहा, कि देखो बाप टीचर सतगुरू तीनों ये एक है , ये एक ही भगवान परमात्मा का वन्डरफुल पार्ट है, फिर वो हमारा बाप अलग, टीचर अलग,सतगुरू अलग ऐसे स्थूल में अनुभव होता है.....दूसरा कल मेरे को अमृतवेले का बहुत अच्छा अनुभव हुआ, बाबा त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, तीनों लोकों का मालिक हमको बना रहे हैं, यहॉ त्रिनेत्री से त्रिकालदर्शी हुए, त्रिकालदर्शी से, तीनों लोकों का – स्थूल सूक्ष्म और मूल, निराकारी आकारी साकारी तीनों ही रूप में

सामने आता है। वन्डरफुल बाबा हमारे बुद्धि को स्वच्छ व शक्तिशाली बना देता है। थैंक्यू..... ओम शान्ति..... वन्डरफुल.....।

गुलबर्गा योगभट्ठी 28–04–17

ओम शान्ति